विद्यालयी शिक्षा में लोकतंत्र का अभ्यास

पवन कुमार मिश्रा
शोध विद्यार्थी
जगन्नाथविश्वविद्यालय,
बहादुरगढ़ , हरियाणा

सार

प्रस्तुत लेख में लोकतंत्र और उसकी विशेषताओं के बारे में बताया गया है । इसमें लोकतांत्रिक शिक्षा के विषय में बताते हुए उसके उद्देश्यों, लोकतांत्रिक शिक्षा कि पाठ्यचर्या,शिक्षण की विधियाँ,अनुशासन और लोकतांत्रिक शिक्षा प्रदान करने में विद्यालयों और शिक्षकों की भूमिका के विषय में बताया गया है । इस लेख में यह बताया गया है कि किस प्रकार लोकतंत्र हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक विकास; हमारी सामाजिक एकता और बंधुत्व के लिए अत्यंत आवश्यक हैं । लोकतंत्र ही हैं जो व्यक्ति को व्यक्ति से और उसके समाज से जोड़ता है; समाज को एकजुट बनाए रखता है और लोगों में एक-दूसरे के प्रति आदर और सम्मान का भाव जागृत करता है । इसके अभाव में समाज में एक प्रकार की अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हो जाती है । अतः इसका अभ्यास विद्यार्थियों को बचपन से ही विद्यालयों में करवाना चाहिए ताकि यही विद्यार्थी भविष्य में एक अच्छे नागरिक बनकर अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन कर सकें ।इस लेख में लोकतांत्रिक मूल्यों औरविद्यालयों में उसके अभ्यास हेतु कुछ सुझाव दिए गये हैं ।

- **मुख्य बिन्दु : लोकतंत्र, शिक्षा**

लोकतंत्र

लोकतंत्र, सरकार का वह रूप है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सरकार के चुनाव का पूरा अधिकार होता है । लोकतंत्र में बहुमत का शासन होता है । लोकतांत्रिक सरकार जनता की सरकार है, जो जनता के द्वारा चयनित की जाती है और जनता के हित के लिए कार्य करती है । यह एक ऐसी प्रणाली है जिसमें किसी का शोषण नहीं किया जाता है, प्रत्येक व्यक्ति को उनकी क्षमताओं और योग्यताओं के अनुसार काम करने के समान अवसर प्राप्त होते हैं और सरकार द्वारा सभी के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास किया जाता है । लोकतंत्र में वर्ग, जाति, पंथ, जन्म, धर्म या भाषा के आधार पर किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं किया जाता बल्कि संविधान द्वारा सभी को अपने-अपने रीति-रिवाजों, परम्पराओं और विश्वासों को मानने की पूर्ण स्वतंत्रता दी जाती है । लोकतंत्र में संविधान द्वारा सभी व्यक्तियों को मौलिक अधिकारों की गारंटी दी जाती है, और व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए अवसरों की समानता दी जाती है । इसमें व्यक्ति की गरिमा को प्रधानता दी जाती है ।

लोकतंत्र की मुख्य विशेषताएं

- लोकतंत्र शासन प्रणाली में शासन का मुख्य आधार ही आमजन हैं ।
- इसमें सहयोग, बंधुत्व, स्वतंत्रता, जिम्मेदारी, समझ और न्याय की भावना निहित होती है ।
- इसमें लोगों के साथ वर्ग, जाति, जन्म, धर्म या भाषा के आधार पर किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता ।
- लोगों के व्यक्तिगत विकास के लिए सबको स्वतंत्रता और समानता के समान अवसर प्रदान किए जाते हैं ।
- इस व्यवस्था में सभी को मौलिक अधिकारों की गारंटी दी जाती है ।

- लोकतंत्र को जीवन जीने का, चीजों को जानने का, सोचने का और समझने का एक तरीका माना गया है ।
- इसके अंतर्गत तर्क, चर्चा, विचार-विमर्श, अनुनय और लेन-देन के माध्यम से समस्याओं को हल किया जाता है ।
- यह व्यक्तिगत हितों को बढ़ावा देता है और उनकी रक्षा करता है ।
- इसके अंतर्गत प्रत्येक व्यक्ति को उसकी क्षमता के अनुसार विकास के असीम अवसर मिलते हैं ।
- लोकतंत्र में, लोगों की इच्छाओं को प्रधानता दी जाती है ।
- किसी व्यक्ति या समूह का दूसरे पर कोई वर्चस्व नहीं होता ।

लोकतंत्र और शिक्षा

लोकतांत्रिक मूल्यों की शिक्षा, विद्यार्थियों को उनके शैक्षिक जीवन के आरंभ से ही दी जानी चाहिए, जिसके क्रियान्वयन हेतु विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं द्वारा इनको अभ्यास कराने की आवश्यकता है । स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व न्याय, व्यक्ति की गरिमा, जिम्मेदारी का बंटवारा आदि जैसे लोकतांत्रिक मूल्य शिक्षा को अधिक प्रभावी, सार्थक, प्रासंगिक और उपयोगी बनाने के लिए लागू होते हैं ।

लोकतांत्रिक शिक्षा में उद्देश्य

- लोकतांत्रिक नागरिकता का विकास
- व्यावसायिक दक्षता में सुधार
- व्यक्तित्व का विकास
- नेतृत्व की क्षमता का विकास

पाठ्यचर्या

- बदलते समय के अनुसार पाठ्यक्रम में लचीलापन और गतिशीलता होनी चाहिए ।
- इसे विद्यार्थियों के विविध स्वाद और स्वभाव, योग्यता और क्षमताओं, जरूरतों और हितों को पूरा करना चाहिए ।
- यह बच्चों की सोच और रचनात्मक क्षमताओं को प्रोत्साहित करने वाला हो ।
- एक लोकतांत्रिक पाठ्यक्रम में स्थानीय परिस्थितियों और पर्यावरणीय मांगों को ध्यान में रखा जाए ।
- इसमें सामाजिक तत्व पर बहुत जोर दिया जाना चाहिए ।
- लोकतांत्रिक पाठ्यक्रम में व्यावसायिक कौशल को शामिल करने का प्रावधान होना चाहिए ।
- एकीकरण के सिद्धांत के आधार पर पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाना चाहिए ।
- इसे विद्यार्थियों की विविध रुचियों, दृष्टिकोणों, अभिरुचियों और क्षमताओं के अनुरूप तैयार किया जाना चाहिए ।
- एक लोकतांत्रिक पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों जैसे- विज्ञान, वाणिज्य, सामाजिक विज्ञान, व्यावसायिक विषयों, स्वास्थ्य और स्वच्छता को स्थान दिया जाना चाहिए ।

शिक्षण विधियाँ

- यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों की भागीदारी को प्रोत्साहित करता है और सोचने और करने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करता है ।
- लोकतांत्रिक प्रवृत्ति शिक्षण के आधुनिक और गतिशील तरीकों को जन्म देती है । जैसे- करके सीखना, प्रयोगशाला और प्रयोगात्मक विधि, परियोजना विधि, मोंटेसरी पद्धति, सामाजिक तकनीक, संगोष्ठी, संगोष्ठी, चर्चा, समस्या-समाधान, समूह कार्य, आदि ।

उपरोक्त तकनीकों में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी, पहल, रुचि, निर्णय शक्ति और स्वतंत्र सोच पर जोर दिया जाता है ।

- विद्यार्थियों को निर्देश न देकर उनको प्रोत्साहित करना चाहिए ।

विद्यालय की भूमिका

- विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास हेतु विद्यालय द्वारा विद्यार्थियों को स्वतंत्रता प्रदान करनी चाहिए ।
- सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान किए जाने चाहिए ।
- विद्यालय द्वारा विद्यार्थियों को अनुशासित, रचनात्मक और अनुकूलनीय बनाने में मदद करनी चाहिए ।
- विद्यालय को समाज के एक लघु के रूप में कार्य करना चाहिए, जहाँ लोकतांत्रिक आदर्शों को न केवल सैद्धांतिक रूप से पढ़ाया जाए, बल्कि व्यावहारिक रूप से इसकी बहुमुखी गतिविधियों को सिखाया जाना चाहिए ।
- विद्यार्थियों में अच्छे नागरिकता के गुणों का विकास करना ।
- विद्यालय को एक ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिए जहाँ विद्यार्थियों का सम्पूर्ण विकास हो सके ।

अनुशासन

- स्व-अनुशासन
- सामाजिक अनुशासन

शिक्षक की भूमिका

- लोकतांत्रिक प्रणाली में शिक्षक एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि वह विद्यालय और समाज में लोकतांत्रिक भावनाओं और विचारों को फैलाने का सबसे अच्छा माध्यम है ।
- लोकतंत्र की सफलता काफी हद तक शिक्षक के दृष्टिकोण, व्यवहार और उसके जीवन जीने के तरीके पर निर्भर करती है ।
- वह सामाजिक परिवर्तन का माध्यम है और विद्यालय में लोकतांत्रिक संस्कृति का सूत्रधार है ।
- शिक्षक, विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षिक अनुभव प्रदान करने के लिए एक अच्छा शैक्षिक वातावरण उपलब्ध करवाता है । वहाँ वह उन सभी अवसरों का उपयोग करना है, जिससे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित किया जा सके ।
- शिक्षक को एक तानाशाह नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे एक दोस्त, दार्शनिक, मार्गदर्शक और एक सतर्क पर्यवेक्षक की तरह होना चाहिए, जो विद्यार्थियों के कार्यों में हस्तक्षेप न करे, बल्कि उनका सहयोग करे ।
- वह विद्यार्थियों को स्वतंत्रता, प्रेम और सहानुभूति प्रदान करने वाला हो ।
- वह पक्षपात के किसी भी रूप से मुक्त हो ।
- वह समुदाय के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखने वाला हो ।
- वह अपने जीवन में लोकतांत्रिक सिद्धांतों का पालन करता हो ।

विद्यालयों में लोकतंत्र का अभ्यास कैसे करें?

- संयुक्त योजना
- व्यापक पाठ्यक्रम

- सभी का सम्मान
- आलोचनात्मक सोच का विकास
- रचनात्मक सोच को बढ़ावा
- मानव संबंधों के लिए प्रशिक्षण
- स्वतंत्रता और समान अवसर प्रदान करना ।
- प्रत्येक विद्यार्थी के साथ एक अच्छा संबंध स्थापित करना ।
- नेतृत्व की क्षमता का विकास करना ।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए शिक्षा ।
- सीखने-अधिगम कि विभिन्न के विभिन्न विधिओं का प्रयोग करना ।